कृषि किरण अंक-11, जून 2021: पृष्ठ: 01-03
http://saaer.org.in

रबी में स्वीट कॉर्न (मीठी मक्का) की खेती

अजय कुमावत एवं जितेन्द्र वर्मा
डॉ बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय,
डॉ अम्बेडकर नगर (महू), जिला इंदौर (म.प्र.)

स्वीट कॉर्न एक विशेष प्रकार की मक्का है जो कि अधिक मीठी होती है। इसलिये इसे स्वीट कार्न (मीठी मक्का) कहते हैं। इस मक्का को दूधिया अवस्था में तोड़कर उपयोग में लिया जाता है। इसकी खेती वर्ष भर की जा सकती है। ये फसल कम समय में तैयार हो जाती है। अतः इससे कम समय में अधिक लाभ कमाया जा सकता है। इसकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अधिक मांग होने के कारण डिब्बाबन्दी करके निर्यात भी किया जा सकता है। शहर के आसपास के क्षेत्रों में इसकी खेती अधिक लाभकारी है।

स्वीट कॉर्न उत्पादन की वैज्ञानिक विधि

खेत का चुनाव व तैयारीः

रेतीली दोमट से चिकनी दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो उत्तम रहती है। लवणीय व क्षारीय भूमि इसके लिये उपयुक्त नहीं होती है। एक जुताई मिट्टी पलटने हल से करके 2-3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिये। तत्पश्चात पाटा लगाकर खेत को समतल कर लें। अंतिम जुताई के समय 18-20 गाड़ी गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर भूमि में मिला दें।

किस्मों का चयनः

मक्का की संकुल किस्म, माधुरी के भुट्टे 55 से 60 दिन में तोड़े जाते हैं। इसके दानों का रंग पीला होता है। इसकी खेती रबी या जायद मौसम में की जाती है। इसके अलावा प्रिया, अल्मोड़ा स्वीट कॉर्न, ऑरेंज स्वीट कॉर्न आदि किस्मों का प्रयोग करें। हमेशा प्रमाणित बीज का ही प्रयोग करना चाहिये।

बीज दरः

स्वीट कॉर्न का बीज हल्का होने के कारण 10-12 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त रहता है।

बुवाई का समयः

रबी में स्वीट कॉर्न की बुवाई 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर के मध्य करनी चाहिये।

बुवाई की विधिः

बुवाई कतारों में ही करनी चाहिये। कतार से कतार की दूरी 75 से 100 से.मी.

रखनी चाहिये जिससे तुड़ाई में सुविधा हो। बीज को 5 से.मी. गहाराई पर बोना चाहिये। पौधे से पौधे के बीच की दूरी 20-25 से.मी. का अन्तराल रखना चाहिये। इसमें पौधे की संख्या 65 से 80 हजार प्रति हैक्टेयर होनी चाहिये।

बीजोपचारः

मृदा व बीज जनित बीमारियों से बचाव हेतु बीज को सदैव थाइरम 3 ग्राम/कि.ग्रा. की दर से अथवा 4 ग्राम/कि.ग्रा. बीज को एप्रोन 35 एस.डी. नामक कवकनाशी से उपचारित कर बोयें।

उर्वरकः

स्वीट कॉर्न के लिये नत्रजन 75 कि.ग्रा. पफास्फोरस 30 कि.ग्रा. व जिंक सम्ल्ेट 20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। इसमें फास्फोरस जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा बुवाई के समय 10-15 से.मी. की गहराई पर कतारों में ऊपर कर देना चाहिये व नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के समय व आधी मात्रा को 2-3 बार अलग-अलग अवस्थाओं पर देना चाहिये।

खरपतवार प्रबंधनः

स्वीट कॉर्न की फसल को शुरु के 35 दिनों तक खरपतवार से मुक्त रखना चाहिये। प्रभावी खरपतवार नियंत्रण के लिये बुवाई के बाद उगने वाले खरपतवारों के लिये एक बाद अन्तराशस्य क्रियायें करके नियंत्रित किया जा सकता है।

सिंचाईः

खरीफ में यदि वर्षा न हो तो सिंचाई अवश्य करें परन्तु रबी की फसल में 4-6 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। फूल आने व दूधिया अवस्था पर सिंचाई अवश्य करें।

अंतराशस्यः

स्वीट कॉर्न के साथ में सोयाबीन, मूंग, उड़द की फसल भी बोई जा सकती है इसके लिये मक्का की 30-30 सेमी पर दो कतार बोई जाती है तथा इसके बाद मूंग, उड़द या सोयाबीन की दो कतारें 30-30 सेमी पर बोयें। मक्का व अरहर को 1-1 कतार के अनुपात में बोनी चाहिये।

फसल संरक्षण/कीट प्रबंधन

तना छेदकः

इसके नियंत्रण हेतु बुवाई के 15 से 30 दिन के मध्य कार्बोरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 1.85 किग्रा प्रति हैक्टेयर पानी में घोलकर छिड़काव करें अथवा फसल जब 15 दिन की जावे तब कार्बोफयूरान 3 प्रतिशत कण 5-8 किग्रा प्रति हैक्टेयर की दर से पौधों के पोटों में डालें।

मोयलाः

पौधों में नर मंजरी निकलते समय इसका आग्रमण होता है इसके नियंत्रण हेतु 250-300 मि.ली. फास्फोमिडान 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग प्रबन्धन

तना विगलनः

इसमें मांजर आने के बाद पौधा मुरझाकर सूखने लगता है। रोगी पौधे के तने का रंग भूमि की सतह के पास से भूरा पड़ जाता है जो बाद में सूखकर सिकुड़ जाता है। नियंत्रण के लिये मई-जून में 2 बार गहरी जुताई करें। पौधों की संख्या अधिक नहीं रखें।

पत्ता धब्बा रोगः

इसमें रोगी पौधों की पत्तियों पर छोटे-छोटे पीले रंग के बहुत सारे धब्बे बन जाते हैं।रोग की तीव्रता में धब्बे पत्तियों की पूरी सतह पर फैलकर उसे सुखा देते हैं। नियंत्रण के लिये केवल उन्नत व प्रमाणित बीज ही बोयें तथा फसल की कटाई के पश्चात बचे रोगी अवशेषों को जला दें और मैन्कोजेब दवा के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

भुट्टों की तुड़ाईः

स्वीट कॉर्न के भुट्टों की तुड़ाई दूधिया अवस्था होने पर ही कर लें। परागण के 15-20 दिन बाद इसमें शर्करा की मात्रा सर्वाधिक (22-40 प्रतिशत) होती है। इसके बाद शर्करा स्टार्च में परिवर्तित होने लगती है जिससे मिठास व गुणवत्ता कम होने लगती है। अतः तुड़ाई का उपयुक्त समय परागण के 18-20 दिन बाद होता है।

उपयोगः

स्वीट कॉर्न को सेक कर या उबाल कर खाया जा सकता है। इससे स्वादिष्ट व्यंजन भी तैयार किये जाते हैं। इसकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग होने के कारण डिब्बाबंदी करके निर्यात करने पर अधिक आमदनी प्राप्त की जा सकती है।